

## मनोविच्छेदी हिस्त्रीया-

उन्माद का दो रूप है - स्वप्रांतरित उन्माद तथा मनोविच्छेदी उन्माद।

मनोविच्छेदी उन्माद में मुख्य रूप से मानसिक लक्षण पाये जाते हैं।

### लक्षण;

(i) स्मृतिभ्रम तथा आत्मविस्मृति - मनोविच्छेदी उन्माद के रोगी में स्मृति भ्रम देखने को मिलता है, ऐसे रोगी कुछ भी याद नहीं रख पाता है और कभी-कभी अपना नाम भी भूल जाता है।

(ii) बहुत व्यक्तित्व - ऐसे रोगी अलग-अलग प्रकार के व्यक्तित्व बनाये रखते हैं, दिन में पंडित जैसा भाषण देते हैं तो रात में चोरी करते हैं।

(iii) निद्रा भ्रमण - ऐसे रोगी रात में निद्रा भ्रमण करते हैं, कभी-कभी रात में विधावन से जगाकर स्वाना-बनाने लगते हैं, तो कोई-कोई रोगी पूजा-पाठ करने लगते हैं।

(iv) अगोडपन - ऐसे रोगी एकतरह के वातावरण में नहीं रह पाते हैं, उनमें अगोडपन का गुण पाया जाता है।



(ii) मुर्दा तथा संवेगात्मक उपद्रव - ऐसे रोगी में बार-बार मुर्दा आता है तथा वह कभी हँसने लगता है तो कभी रोने लगता है।

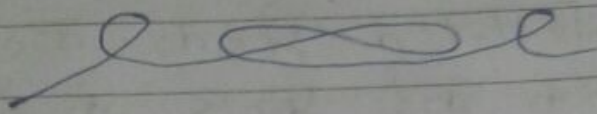
कारण: (i) वंशपरंपरा - इस तरह के रोग उन व्यक्तियों में पाया जाता है जिनके पूर्वजों में ये रोग मौजूद होता है।

(ii) मानसिक द्वंद - जिन लोगों में मानसिक द्वंद की अधिकता रहता है उनमें विच्छेद उन्माद पनपने की खतरा ज्यादा रहता है।

(iii) दुखद परिस्थिति - व्यक्ति अपनी दुखद परिस्थितियों से बचाव के लिए विच्छेद उन्माद और विशेष रूप से स्मृति लोप से पीड़ित हो जाता है। अधिक तनावपूर्ण परिस्थिति के होने पर स्मृति - लोप के साथ-साथ भ्रमों का लक्षण भी विकसित हो जाता है।

(iv) पुनरावृत्त असफलताएँ - विशेष रूप से बहुव्यक्तत्व का प्रमुख कारण व्यक्तिगत समायोजन तथा किसी कार्य में बार-बार असफल होने पर यह रोग होता है।

उपचार- मनोविश्लेषण विधि, संकेत  
तथा सम्मोहन द्वारा ~~का~~ मनोविच्छेदी  
उन्माद का उपचार किया जाता है।



14  
~~14~~  
~~14~~